भारतीय रुपया भी अब डॉलर,पौंड, और यूरो जैसी ग्लोबल मुद्राओं के प्रतिष्ठित क्लब में शामिल हो गया है. देवनागरी लिपि में र और रोमन लिपि में आर के मिलेजुले स्वरूप वाले प्रतीक चिन्ह को कैबिनेट की हरी झण्डी मिल गई है.यह भारत की बढ़ती आर्थिक पावर को प्रदर्शित कर रहा है. इसका एक उदाहरण है कि भारत की अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ कर 10 खरब डालर से अधिक हो गया है जो विश्व के आर्थिक जगत में भारत के मजबूत उपस्थिति दिखाता है.

रामशंकर शर्मा.

impressum

Herausgeber, Verantwortlichen für die Redaktion:
Rajneesh Mangla
Albert Roßhaupter Str. 110
81369 - München
fon: +49-89-3706-7377
mobil: +49-179-764-4347
email: rajneesh.mangla@gmail.com
Redaktion:
Ramashankar Sharma
email: sharmarama2000@yahoo.com
Gestaltung:
Ramashankar Sharma
Satna (M.P.) INDIA
Redaktionelle Mitarbeiter:
Christine Liedl
email: tine-in-nepal@hotmail.de
Saravjit Singh Siddu
email: sidhu_66@hotmail.com

Bank Verbindung:
Rajneesh Mangla(Basera Verlag)
Hypovereinsbank München
Konto: 86627574
BLZ: 70020270
Ausgabe:18
Auflage: 500 Exemplaren
Erscheinung: drei-monatlich
internet: www.basera.de/
Printed in Germany
USt-IdNr.: 145/192/20203

बसेरा- जर्मनी की एक मात्र हिन्दी पत्रिका

जीवन शैली

ट्रेन बनी घर

आरामदायक रेलों में यात्रा तो आपने की ही होगी। पर क्या आप हमेशा के लिए इन रेल के डिब्बों में रहना चाहेंगे? ऐसा कुछ मध्य जर्मनी में रह रहे फोटोग्राफर Marco Stepniak ने देखा था जब वे सत्रह वर्ष के थे। उनके कुछ दोस्त इकट्ठे एक रेल के डिब्बे में रह रहे थे। उन्हें तब बहुत मज़ा आया। उन्होंने इस तरह के जीवन को एक सपने के रूप में पाल लिया और अब उनका यह सपना पूरा हो गया। अपनी गर्लफ्रेण्ड Vanessa Stallbaum के साथ मिलकर उन्होंने बीस बीस हज़ार यूरो के दो पुरानी डाक वाले रेल के डिब्बे ख़रीद कर उनमें अपना घर सजाना शुरू कर दिया है। यही नहीं, डिब्बों को रखने के लिए 1660 वर्गमीटर ज़मीन खरीदने के लिए भी उन्हें 74 हज़ार यूरो देने पड़े। फिर डिब्बों को वहां तक लाने में ही चौबीस हज़ार यूरो खर्च हो गए। पहले पटरियां और रेल इंजन खास तौर पर किराए पर लेने पड़े। उसके बाद भारी ट्रकों और क्रेन द्वारा डिब्बों को वहां तक लाकर पहले से तैयार की गई पटरियों पर रखा गया। इसके बाद भी खर्चे कम नहीं हुए बल्कि बढ़ते चले गए। एक रेल के डिब्बे में पानी, बिजली का इन्तज़ाम, सर्दी से बचने के लिए, ठण्डी हवा को रोकने और डिब्बों को गर्म रखने का इन्तज़ाम कोई भी दस्तकार नहीं कर सकता था। सभी समस्याओं का हल उन्हें खुद निकालना पड़ा। दिसम्बर 2010 से उन्होंने अपने नए घर में रहना शुरू कर दिया है।

विमान को बना रहे घर

हिल्सबोरो ओरेगॉन के ब्रूस कैम्पबेल बोइंग 727 को घर बनाने में जुटे हुए हैं। उनका कहना है कि यह घर उन्हें शक्ति, सुरक्षा और क्षमता प्रदान करता है। उनका मानना है कि कोई भी यदि दृढ़ संकल्प के साथ अपनी इच्छा पूर्ति में जुट जाये तो उसे बड़ी आसानी से ऐसा घर मिल सकता है। इस घर के इन्टीरियर के लिये उन्होंने विश्व भर के लोगों से प्रस्ताव मांगे हैं। उनकी इच्छा इसे और बेहतर घर बनाने की है।